Literacy for a Billion

Movie: Gadar Ek Prem Katha
Year: 2001

Song: Ud ja kale kawa (male)
Lyricist: Anand Bakshi

उड़ जा काले कावाँ
तेरे मुँह विच खंड पावाँ
ले जा तू संदेसा मेरा
मैं सदके जावाँ
बागों में फिर झूले पड़ गए
पक गईयां मिठीआँ अंबीया
ये छोटीसी ज़िंदगी ते
रातां लंबीयां लंबीयां
ओ घर आजा परदेसी
के तेरी मेरी इक जिंदड़ी
ओ घर आजा परदेसी
के तेरी मेरी इक जिंदड़ी
हो...
छम छम करता आया मौसम
प्यार के गीतों का

हो...
छम छम करता आया मौसम
प्यार के गीतों का
रस्तें पे अँखिंयाँ रस्ता देखे
बिछड़े मीतों का
सारी सारी रात जगाएँ
मुझको तेरी यादें
मेरे सारे गीत बने
मेरे दिल की फरियादें
ओ घर आजा परदेसी
के तेरी मेरी इक जिंदड़ी
ओ घर आजा परदेसी
के तेरी मेरी इक जिंदड़ी

Disclaimer: PlanetRead does not own these lyrics and is not using them for any commercial purpose. For over 20 years, PlanetRead has been subtitling Bollywood songs for mass literacy. These lyrics are being offered as part of PlanetRead's literacy development initiative.

PlanetRead is a tax-exempt, not-for-profit: 501(c) (3) in the United States and 80(G) in India.